विकास खण्ड़ नूरपुर –एक झलक

नूरपुर विकास खण्ड़ कांगड़ा जिले के 15 विकास खण्ड़ों में से एक हैं। इस विकास खण्ड का ज्यादातर भौगिलिक क्षेत्र के पूर्व में गुरदासपुर जिला (पंजाब) तथा जिला चम्बा की सीमीओं से सटा हुआ हैं। वर्तमान में इस विकास खण्ड़ की 52 पंचायते हैं । तथा ज्यादातर पंचायतों के मुख्यालय सड़क मार्ग से जुडे हुये हैं। नूरपुर विधान सभा क्षेत्र के अर्न्तगत सभी 52 पंचायतों का क्षेत्रफल आ जाता हैं। इस विकास खण्ड़ में स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वारोजगार के अर्न्तगत 80 स्वंय सहायता समूह बने है इस विकास खण्ड़ का मुख्यालय नूरपुर बाजार जो कि एक ऐतिहासिक स्थान है में स्थित हैं। नूरपुर पुराने समय में पठानिया वंश के राज्यों की राजधानी भी रहा हैं तथा इसका नाम जहांगीर की पत्नि नूरजहां के उपर रखा गया है। यहाँ के लोग ज्यादा तर कृषक हैं। वे धान, गेहूँ, चना, मक्की तथा विभिन्न मौंसमी सब्जियों तथा फलों जैसे आम व सन्तरा का उत्पादन करते हैं। वे धार्मिक प्रवृति होने के कारण माता नागनी, वृजराज स्वामी काठगढ़ मन्दिर इन्दौरा व स्थानीय देवताओं की पूजा भी करते हैं। बहुत से लोग हर रविवार को सत्संग में सफेद लिवास मे जाते हैं। लोग काफी मेहनती व परिश्रमी हैं तथा सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्नयोजनाओं के कार्याव्यन में बढ़ चढ़कर भाग लेते हैं। हालाकि ज्यादातर लोगें के पास छत हैं परन्तु सयुक्त परिवार प्रणाली की वजह से कुछ लोगो के पास प्रयाप्त आवास नहीं है। गरीबी के नीचे रहने वाले परिवारो की संख्या 3030 है। ज्यादातर बी॰ पी॰ एल॰ परिवार बेरोजगारी की समस्या से जूझ रहे हैं। इसी कारण छोटे–छोटे काम धन्धे जैसे पशुपालन, बकरी पालन, सुअर पालन, टैंट हाउस, बांस की टोकरियां बनाने, छोटी–मोटी दुकान खोलने इत्यादि गतिविधियों के लिए अर्थिक सहायता दी जा रही है ताकि इन परिवारों की आय बढाई जा सके। 80 स्वंय सहायता समूह क्षेत्र की लगभग 35.40 पंचायतो से सम्बन्धित है। वे छोटी–छोटी बचत करके अपने लिए भविष्य का ताना बाना बुनने में लगे है।

1

नूरपुर विकास खण्ड में जलागम विकास कार्यक्रम के अर्न्तगत सफलता की कहानियाँ

1. **जलागम क्या हैः–**

   जलागम भूमि क वह क्षेत्र है जिसमें वर्षा का पानी वहकर एक निश्चित स्थान पर आता है।

2. **जलागम क्षेत्रः–**

   जलागम समान्यता 500 हैक्टेयर का वह क्षेत्र होता है जिसका विकास जलागम विकास पद्वति के आधार पर किया जाता है।

3. **उद्वेश्यः–**

वाटर शैड के मुख्य उद्वेश्य चयनियत क्षेत्रो का समग्र विकास, वर्षा के पानी का संग्रहण तथा उपयोगिता रोजगार के अवसर को सूचित करना, गरीबी अन्मूलन तथा स्त्रातो का विकास, प्राकृतिक आपदा के विपरित प्रभावो की कमी, प्राकृतिक संसाधनो का विकास आदि है।

4. **जलागम क्षेत्र में किए जाने वाले कार्यः–**

जलागम क्षेत्र के विकास हेतू भू॰ संरक्षण, नमी संरदान सम्बन्धी कार्य, जल संरक्षण तथा जल संग्रहण से सम्बन्धित गतिविधियां, वनीकरण तथा चरागाह विकास, बागवानी, कृषि विकास सम्बन्धि गतिविधियां आदि संचालित की जाती है।

5. **जलागम क्षेत्र के चयन हेतू मापदण्डः–**

1) ऐसे क्षेत्र जहाँ पर पेयजन की गम्भीर सम्सया हो तथा सूखे से प्रभावित हो।
2) ऐसे क्षेत्र जिनमें अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जन जातियों की जनसंख्या का बढ़ा भाग उन्त क्षेत्रो पर निर्भर करता हैं।
3) ऐसे क्षेत्र जहाँ पर सार्वजनिक भूमि अधिक हो जिसकी उत्पादकता बढ़ाकर रोजगार सृजन की सम्भावना हो।
4) ऐसे क्षेत्र जहाँ बजर भूमि अधिक हो।
5) अन्य विकसित जलागम क्षेत्रो के साथ लगने वाले क्षेत्र।

6. **हरियाली दिशानिर्देशः–**

जलागम क्षेत्रों के विकास हेतू परियोजना का कार्यान्वयम हरियाली दिशानिर्देशे अनुसार पंचायत राज संस्थओं के माध्यम से किया जा रहा है। इन योजनाओं का जलागम क्षेत्र से सम्बन्धित जलागम संघ अथवा ग्राम सभा द्वारा अनुमोदन किया जाता है। तथा अनुमोदित योजनाओं के अर्न्तगत जल संग्रहण सम्बन्धी गतिविधियों को कार्यरुप दिया जाता है।

प्रस्तावनाः—

बदलते हुऐ परिवेश में समाज का हर वर्ग अपने आपको ढालते हुए एक अनजाने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ रहा है क्योंकि हमारा समाज क्रान्तिकारी परिर्वतनो की प्रक्रिया से गुजर रहा हैं।

पश्चिमी शिक्षा, राजनैतिक आर्दशों, सामाजिक तथा सास्कृतिक मूल्य में लगातार परिर्वतन आ रहा हैं। आज के बदलते हुए ग्रामीण हिमाचल में गरीबी की स्थिति में भी लगातार परिर्वतन आ रहा है। शायद जलागम क्षेत्र में किए जाने वाले कार्यो, गतिविधियों के लिए उन क्षेत्र के लोगो जो कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से जलागम क्षेत्र पर निर्भर हों, के स्वंय सहायता समूह एवम उपभोक्ता समूह बनाकर जलागम क्षेत्र विकास गतिविधियों में जोड़ा जाता हैं। विकास खण्ड़ नूरपुर में भी स्वंय सहयता समूहो का गठन किया गया है। इन समूहो को आर्थिक गतिविधियो के साथ जोड़ा गया हैं।

निधिया राम
खण्ड विकास अधिकारी
नूरपूर विकास

स्वंय सहायता समूह का कार्यन्व्यनः–

सहायता जलागम विकास कार्यक्रम के अर्न्तगत स्वंय सहयता समूहो का गठन अति महत्वपूर्ण योजना हैं। समूहो का गठन उनके बैंक से जुडने की प्रकिया, समूहो का वर्गीकरण तथा बाद में उन्हें रिवालविंग फंड देने की तक एक लम्बी प्रक्रिया हैं। कोई भी स्त्री व पुरुष जिनकी जनसंख्या कम से कम 10 तथा अधिकत्तम 20 हो, गांव में किसी भी कोने पर बैठ कर एक समूह बनाने के वारे में निर्णय लेते है। ये समूह स्वंय सहायता समूह इस लिए कहलाते हैं क्यो कि यह किसी दूसरी ऐजेंसी या अनुष्ठान पर प्रत्यक्ष रुप से निर्भर होने के बजाए अपनी सहायता स्वंय करते है। समूह के सदस्य अपनी सहमती से समूहो के नेताव सचिव कर उनकी योग्यता के आधार पर चयन करते हैं। कम से कम प्रति सदस्य 20 रु॰ समान्य तौर पर समूहो के सदस्य हर महीने जमा करते हैं। बचत की राशि बैंक में रखने के वजाए आपसी लेन देन के लिए 2 रु॰ प्रति सैकड़ा ब्याज प्रति माह के हिसाब से बांटी जाती है जितना ज्यादा व्याज लेन देन उतना ही अच्छा सम्बन्धित माना जायगा। स्वंय सहायता समूह पुरुषो के या सत्रियों के या मिश्रित हो सकते है। समूहो के सभी सदस्यों को नियमित रुप से समूह की बैठकों में भाग लेना चाहिए। समूहो को आरम्भ से हो उन गतिविधियां व काम धन्धे के वारे में योजना बनानी होती है जो उन्हाने बारे में योजना बनानी चाहिए होती हैं जो उन्होने वाद में अपनानी होती हैं। शुरू में नियमित बचत व लेन देन के वारे में जोर दिया जाता है। सदसय अपनी छोटी–छोटी जरुरतो जैसे मुर्गी खरीदना, बच्चो की फीस व अनाज खरीदना, शादी विवाह में भाग लेना इत्यादि पूरी करते हैं। इसके बाद बड़ी जरुरतो पर ध्यान दिया जाता हैं। फिर जैसे सदस्य लगातार बचत व अन्य गतिविधियां को अपने स्तर पर करने के लिए सक्षम हो जाती है। फैसीलेटर की भूमिका कम होनी शुरु हो जाती है। क्योंकि अन्नत समूहो के सदस्यों ने आत्म निर्भर तो होना ही होता हैं। एक परिवार का एक ही सदस्य समूह का सदस्य होना चाहिए। जब स्वय सहायता समूहो के साथ बैठकें की जाती है तो उस समय हम स्वंय सहायता समूहो के सदस्यो को ट्रेनिंग कार्याक्रमों के बारे में बताया जाता है साथ में कौन–कौन सी गतिविधियं समूहो द्वारा अपनानी चाहिए के वारे में समझाया जाता है। इस विकास खण्ड़ के स्वंय सहायता समूह खुम्ब उत्पाद, डेयरी–पालन, मौसमी व गैरमौसमी सब्जियां उगाना, मुर्गी पालन, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई तथा जंगली व फलदार पौधों की नर्सरी लगाना शामिल है। स्वंय सहायता मनचाहा व्ययसाय अपनाते है तथा प्रशिक्षण लेने की इच्छा भी जताते हैं।

विशाल स्वंय सहायता समूह (दूड़) अधार

विकास खण्ड़ नूरनुर पंचायत अधार में कामकाजी महिलाओ से सामुहिक वारातालाप किया गया तथा उन्हें हरियाली परियोजना के वारे में जानकारी दी गई। उन्हें हरियाली परियोजना के अर्न्गत समूह बनाने के वारे में बतायो गया। 15 दिन के वाद फिर इन काम काजी महिलाओं एक बैठक बुलाई गई तथा समूह का गठन किया गया। इस समूह का नाम विशाल स्वंय सहायता समूह रखा गया। समूह के सदस्यों का चयन किया गया। तथा प्रधान व सचिव का चुनाव भी किया गया। इस समूह में 12 सदस्य है। श्रीमति सरला देवी प्रधान तथा श्रीमति कुशला देवी सचिव सर्वसहमति से चुनी गई। वाकी सदस्यों की सूची निम्न प्रकार है।

क्र॰स॰	सदस्य	प्रधान
1.	श्रीमति सरला देवी	प्रधान
2.	श्रीमति कुशला देवी	प्रधान
3.	श्रीमति उषा देवी	सचिव
4.	श्रीमति पवना देवी	सदस्य
5.	श्रीमति विमला देवी	सदस्य
6.	श्रीमति माया देवी	सदस्य
7.	श्रीमति सन्तोष कुमारी	सदस्य
8.	श्रीमति दर्शना देवी	सदस्य
9.	श्रीमति रजना देवी	सदस्य
10.	श्रीमति अन्जू वाला	सदस्य
11.	श्रीमति कुशलो कुमारी	सदस्य
12	श्रीमति पिन्की देवी	सदस्य

समूह अपनी 20 रु॰ प्रति सदस्य बचत कर रहा है।

मासिक बचतः–

इस समूह की मासिक बचत 200 रु॰ प्रति माह हो रही हैं। समूह के दसस्य इस बचत से अपनी घेरलू व अन्य जरुरतो को पूरा करने के लिए अपने समूह से 2 रु॰ ब्याज प्रति सैकडें की दर ऋृण भी लेते है और किस्तो में वावस करते है। अब समूह ने बैंक से जुडने का निर्णय लिया तथा समूह ने अपनी बचत का खाता बैंक में खुलवा कर प्रधान व सचिव को लेने देने का अधिकार भी दिया।

गतिविधियांः–

यह समूह सब्जी उत्पादन का कार्य करता है। तथा सब्जियों को बेच कर आय अर्जित करने लगे।

समूह ने प्रस्ताव द्वारा निर्णय लिया की अपनी आर्थिक स्थिति को और मजबूत करने हेतू हरियाली परियोजना द्वारा दी जाने वाली पारिक्रामिक राशि (रिवालविंग फंड) लेने का प्रस्ताव विकास खण्ड़ अधिकारी को दिया। विकास खण्ड़ अधिकारी नूरपुर द्वारा उन्हे उन्नत बीज खरीदने व अपना कार्य चलाने हेतू 10000 रु॰ की राशि उपरोक्त स्कीम के अर्न्तगत प्रदान की।

यह राशि उन के लिए बहुत मददगार साबित हुई। उन्होने इस राशि से अच्छी किस्म के बीज व दवाईयां खरीदी। ताकि वह उत्पादन को बढ़ा सकें। उत्पादन बढ़ने से अपनी किस्त की अदायगी करने लगे तथा अच्छी आमदनी होने से उनका जीवन स्तर भी उँचा उठने लगा। विशाल स्वंय सहायता समूह ने एक नई सफलता की कहानी रची जो आसपास के क्षेत्रो में रहने वाले लोगो के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है।

शिव शक्ति स्वंय सहायता समूह पंजाहड़ा

समूह की भूमिकाः–

शिव शक्ति स्वंय सहायता समूह एक ऐसा समूह है जो अपने पैरो पर स्वंय खड़ा है। शिव शक्ति स्वय समूह की सथापना वाटरशैंड़ हरियाली परियोजना के अन्तर्गत की गई। इसके 10 सदस्य है जिनका व्योरा निम्न प्रकार हैं।

1. पुष्पा देवी पत्नी रविन्द्र सिंह
2. कमलेश कुमारी पत्नी तिलक राज
3. मीना कुमारी पत्नी जोगिन्द्र पाल
4. मीना कुमारी पत्नी अमर नाथ
5. सवित्री देवी पत्नी नेसी सिंह
6. दर्शना देवी पत्नी सुभाष चंद
7. किरण बाला पत्नी रुणी दास
8. रक्षा देवी पत्नी गगन सिंह
9. संध्या देवी पत्नी ओम प्रकाश
10. राम पयारी पत्नी ईश्वर दास

इस समूह की शुरुआत 20 रु॰ प्रति सदस्य बचत से की जिसे 6 मास तक जारी रखा तथा दो रु॰ प्रति सैंकडे के हिसाब पर ब्याज लेती रहीं। इसके उपरान्त बैंक में खाता खोला गया। इस समूह कार्य कारता रहा इन्ही बचत रुपयों से उन गरीब महिलाओं की मदद की अकस्मात पैसे प्राप्त नहीं होते जैसे बच्चों की फीस के लिए बिमारी और अन्य प्रकार के घरेलू खर्च इत्यादि।

बैंक से जुडना व रिवालविंग फण्डः–

जब समूह कि आपस में लेनदेन ठीक चलती रहीं चलती रही तो विकास खण्ड़ अधिकारी नूरपुर द्वारा समूह की 10000 रु॰ की पारिक्रामिक राशी (रिवालगि फण्ड) प्राप्त हुई। इन पैसे से समूह ने कच्चा माल खरीद की समूह पे सुचारु रुप से कार्य करना आरम्भ कर दिया।

समूह ने कढाई व बुनाई का कार्य आरम्भ कर दिया। उन्होने पैसे का सही उपयोग किया तथा अपनी मेहनत व परिश्रम से अपनी किश्तें समय–समय पर अदा की समूह द्वारा बनाया गया सामान की बिक्री रैड क्रास के मेला व दुकानो में होने लगी।

जब समूह बनाया गया तो इस समूह को पास अपने घास फूस के घर थे। समूह ने अपनी मेहनत से कमाए पैसो से स्लेटपोस मकान बना लिए है। तथा समूह के सदस्यो के बच्चे सकूलों में अच्छी में अच्छी शिक्षा प्राप्त कर रहें । अब वे अच्छे ढंग से अपना जीवन व्यतीत कर रहें हैं। समूह से जुडने के बाद इन की आर्थिक स्थिति मजबूत हो गई। और एक अच्छी जिन्दगी जी रहे है।

हरियाली जलागम विकास कार्यक्रम के अर्न्तगत पंचायत तलाड़ा मे किए गए निर्माण कार्य

1. कार्य का नामः— निर्माण क्रेट वर्क

स्वीकृत राशिः— 100000 रु॰

भूमिकाः— पट्टियां नोटा में जलागम विकास कार्यक्रम के अर्न्तगत क्रेट लगाए गए। क्रेट वर्क भू॰ संरक्षण के लिए लगाए जाते है। जैसे कि हमें पता है कि यहां के लोगो का कृषि मुख्य व्यवसाय है। लेकिन जब भारी वर्षा से लोगो के खेतो का भूमि कटाव होने लगा तो लोगो के लिए यह भूमि का कटाव हो रहा था तो लोगो के लिए यह चिन्ता का विषय बन गया।जिन लोगो की भूमि का कटाव हो रहा था उन सभी लोगो बैठक की तथा यह निर्णय लिया कि वह ग्राम सभा की बैठक में जाकर इस समस्या के समाधान हेतू ग्राम सभा अध्यक्ष व ग्राम सभा के समक्ष उठाएगें। इसके पछचात इन लोगो ने ग्राम सभा इस मुद्दे को उठाया। तत्पश्चात ग्राम सभा अध्यक्ष ने इस समस्य के समाधान हेतू वहां पर जलागम हरियाली के तहत क्रेट लगवाने की वात कहीं। जिसको ग्राम सभा द्वारा ध्वनि मत से पारितं किया गया। तथा इसके लिए ग्राम सभा द्वारा 100000 रुपयें की राशि स्वीकृत ध्वनि मत द्वारा की गई। जब यह क्रेट बन कर तैयार हो गया तो लोगों में खुशी की लहर दौड गई। इस से निम्न लोगो को लाभ प्राप्त हुआ।

लाभार्थी बर्गः–

1. सरदार सिंह
2. कुलदीप सिंह
3. सुरिन्दर सिंह
4. ओकार सिंह
5. रघूवीर सिंह
6. भाग सिंह
7. महिन्द्र सिंह
8. विजय सिंह

मनसा राम और चरण दास का कहना है कि यदि इनकी भूमि मे यदि यह क्रेट न लगता तो उनकी सारी जमीन पानी के बहाबे से बह जाती और उनका रोजी–रोटी के साधन भी समाप्त हो जाता। बाकी सदस्य भी सहमत है कि भूमी कटाव को रोकने के लिए यह सबसे उचित है तथा उन्होने जलागम हरियाली परियोजना का भी धन्यवाद किया। अब वह खुशखाल कृषक की जिन्दगी जी रहें है। निम्न चित्रो में इस सथान जहां क्रेट लगाए गए है वहां जब यह काम पूर्ण हो गया तो बाद की स्थिति दर्शाई गई है।

2. **निर्माण तालाब लकड़ का पुल तलाड़ा**

स्वीकृत राशी 50000

भूमिकाः—

गांव लक्कड़ का पुल पंचायत तलाड़ा में तालाब का निर्माण जलागम विकास कार्यक्रम को करवाया गया। जैसे पहले भी जिक्र किया है कि कृषि यहाँ के लोगो का मुख्य व्यवसाय के इस लिए यहाँ लगभग सभी लोगो के घर मवेशी होते है। हमारे यहां कुछ गांव अभी भी ऐसे है जहां जल स्त्रोत कम है या पानी की कमी है। इस गांव के लोगो को भी यह पानी की कमी खलती थी। पीने के पानी इन्तजाम वो जैसे हो जाता था लेकिन वाकी कार्यो के लिए पानी की कमी थी और निर्णय लिया कि वह ग्राम सभा में अध्यक्ष से इस समसया का हल पूछेगें। जब लोगो ने ग्रामसभा मे इस विषय में बात की तो अध्यक्ष ने जलागम विकास में तालाब का निर्माण करवाने के लिए 50000 रु॰ की राशि स्वीकृत कीये।

यह तालाब बनने के उपरान्त निम्न चित्र में दर्शाया गया है।

लाभार्थी वर्गः–

1. केसर सिंह
2. ख्याली राम
3. कर्म चनदा
4. रघूवीर सिंह
5. मीर चंद
6. नाथो राम
7. मेसो राम
8. कर्म चंद
9. महिन्द्र सिंह

जब इस तालाब का निर्माण हुआ तो लोगो ने खुशी की एक लहर सी दौड आई। लोगो ने जे॰ई॰ का धन्यवाद किया। तथा जलागम विकास दल के सदस्यो को इस काम होने वाले लाभो के वारे जानकारी दी। उन्हाने बताया कि वह अब पशुओ को पानी पीला सकेगें तथा थोडी बहुत सबजियां भी उगा सकेंगें।

मुरम्मतः–

मुरम्मत कुआँ नोटा (तलाडा) सवीकृत राशि 50000 रु॰

यह कुआँ गांव नोटा पंचायत तलाड़ा में जलागम हरियाली परियोजना के अर्न्तगत बनाया गया है। इस कुएं के मुरम्मत से लोगों ने राहत की सांस ली। इस कुएँ से पहले लोगों को पीने का पानी लाने के लिए कोसो दूर जाना पड़ता था। जिस महिलाओ को कई कठिनाईयों का सामना करना पडता था। अब कुएँ के मुरम्मत के बाद लोगों को लाभ पहुँच रहा है। लोग इस जल का प्रयोग पीने के लिए, कपड़े धोने के लिए। मवेशियों को पीलाने के लिए तथा थोडी बहुत सब्जियो को उगाने में प्रयोग करते है। इस कुएँ का पानी प्रयोग में नहीं लाया जा सकता था। पहले इस कुएँ से जिन लोगों को लाभ पहुँच रहा उन लोगो के नाम इस प्रकार से हैः–

1. रघुवीर सिंह
2. करनैल सिंह
3. बलवीर सिंह

4. ओंकार सिंह
5. बबू राम
6. रिखी राम
7. ज्ञान सिंह

इन सभी लाभार्थोयों ने हरियाली परियोजना के लोगो का धन्यवाद किया। जिस के कारण उनकी बहुत बडी समस्या का समाधन हुआ है।

जल संग्रहण ढ़ाचा मिंजग्राः–

स्वीकृत राशि 30000

जल संग्रहण ढ़ाचा हरियाली परियोजना के एक महत्वपूर्ण कार्य है। इस ढाचे को बनाने में लगभग 30000 का खर्च आता है। यह वर्षा का पानी एकत्र करने के लिए बनाऐ जाते है। वर्षा का पानी घर की छतो से पाइपो द्वारा इन ढाचे में डाला जाता है। जब इन टैकों में पानी काफी मात्रा में इक्टृठा हो जाता है तो फिर इस पानी का प्रयोग किया जाता है। यह टैंक निजी तथा सार्वजनिक दोनो तरह से बनाये जाते है।

जल संग्रहण ढ़ाचे से एकत्रीत जल से लोगो को बहुत लाभ होता है। इस जल का प्रयोग सब्जियाँ या फल दार पौधो को उगाने को भी किया जाता है। जब भी पानी कर कमी हो तो भी जल को निजी कार्यो के लिए भी उपयोग किया जा सकता है। व्यर्थ बहने वाले पानी को जल संग्रहण ढ़ाचे द्वारा उपयोग में लाया जा सकता है। इस जल संग्रहण ढ़ाचे में मछली पालन का कार्य भी किया जा सकता हैं। यह भी आय सृजन का अच्छा साधन है। यह जल संग्रहण ढ़ाचा मिंजग्रा पंचायत गांव ढमोह मे बनाया गया है। यह टैंक सार्वजनिक तौर पर बनाया गया है। इस टैंक को बनाने से निम्न लोगो को लाभ हुया।

1. करतार सिंह
2. मस्त राम
3. प्यारे लाल
4. सरदारी लाल
5. वंसी राम
6. रण सिंह